ISSN : 2581-7353

खंड-2 अंक-2
आषाढ़-भाद्रपद, 2076/ जुलाई-सितंबर, 2019

संवाद पथ

जनसंचार एवं पत्रकारिता केंद्रित पत्रिका

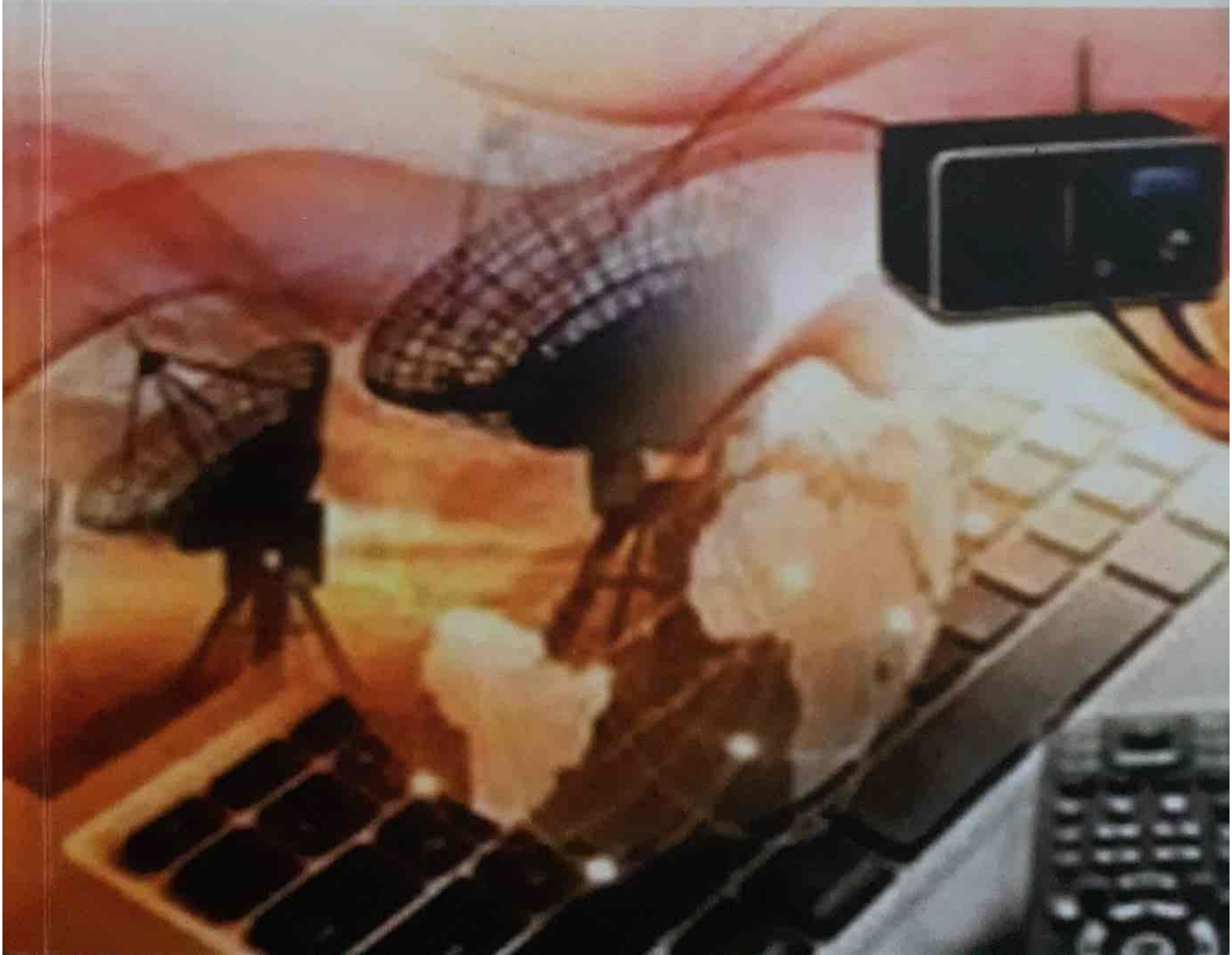

जनसंचार में हिंदी की उपादेयता

डॉ. प्रीती सिंह

"मीडिया जब तक जनता को साथ लेकर नहीं चलेगी, तब तक जनता भी उसका साथ नहीं देगी।"

प्रभाष जोशी (वरिष्ठ पत्रकार)

प्रत्येक क्रांति में उसकी चुनौतियाँ और अवसर निहित होते हैं। सूचना और संचार क्रांति महज एक तकनीकी प्रगति न होकर एक व्यापक प्रभावी घटना है। समाज और जीवन का कोई भी पहलू इससे अछूता नहीं है। वर्तमान समय में बदलते वैश्विक परिदृश्य में संचार माध्यमों एवं प्रौद्यौगिकी के विभिन्न स्रोतों ने तथा नित नए प्रयासों ने पूरे विश्व को ग्लोबल विलेज की परिकल्पना के रूप में साकार किया है। नए विश्व की नई संरचना में आधुनिक जनसंचार माध्यमों का सीधा हस्तक्षेप है। संचार माध्यमों ने दुनिया को छोटा कर दिया है। आज प्रत्येक घटना और उनसे जुड़ा हर पहलू हर क्षण हमारे चिंतन को जोड़ता एवं तोड़ता नज़र आ रहा है। जनसंचार माध्यम आज गतिशील दुनिया के लिए उतने ही ज़रूरी हैं जितने जीवन जीने के अन्य माध्यम।

संचार संस्कृत के 'चर' धातु से निःसृत है। 'चर' का अभिप्राय है 'चलना' निरंतर आगे बढ़ती रहने वाली प्रक्रिया संचरण कहलाती है। संचार को अंग्रेज़ी भाषा में 'कम्यूनिकेशन' (communication) कहा जाता है। "communication" शब्द की उत्पति लैटिन भाषा के शब्द कम्यूनिस (communis) से हुई है, जिसका अर्थ होता है, सामान्य भागीदारी युक्त सूचना और संप्रेषण। (to make common share, to import, to transit) अर्थात् सूचनाओं के आदान-प्रदान में समान भागीदारी निर्मित करना संचार का उद्देश्य है।"[1]

समाज में एक दूसरे से संबंधित एवं सोद्देश्य संप्रेषण प्रक्रिया ही संचार है। संचार को वह प्रक्रिया भी कह सकते हैं, जिसमें स्रोतों एवं श्रोता के मध्य सूचना संप्रेषण होता है। इस प्रकार संचार विचारों के आदान-प्रदान से संबद्ध है।

"Edwin emexy-communication is the art of transmitting information ideas and attitudes from one person to another"[2]

संचार को विभिन्न विद्वानों ने परिभाषित किया है।